उपक्रमणिका

मूलरूप में मैंने 'श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप' को इसी बृहद् आकार में लिखा था। परन्तु प्रकाशन के समय मूल पाण्डुलिपि को चार सौ से भी कम पृष्ठों तक सीमित करना पड़ा, जिससे श्रीमद्भगवद्गीता के अधिकांश मूल श्लोकों की व्याख्या उस संस्करण में नहीं आ सकी। 'श्रीमद्भागवत', 'श्रीईशोपनिषद्', 'श्रीचैतन्य चरितामृत' आदि मेरे अन्य सभी ग्रन्थों में मूल श्लोकों के साथ उनका अन्वय, अनुवाद तथा विशद व्याख्या रहती है। इस विधि से ग्रन्थ बड़ा प्रामाणिक और विद्वत्तापूर्ण बन जाता है तथा अर्थ प्रत्यक्ष हो जाता है। अतः अपनी मूल पाण्डुलिपि की काट-छाँट से मैं प्रसन्न नहीं था। बाद में, 'श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप' की लोकप्रियता बहुत बढ़ जाने पर विद्वानों और भक्तों ने आग्रह किया कि मैं ग्रन्थ को उसके मूल बृहद् रूप में प्रस्तुत करूँ तथा मैकमिलन एण्ड कं० सम्पूर्ण संस्करण के प्रकाशन के लिए सहमत हो गए। अतएव इस महान् ज्ञान-शास्त्र की पूरी 'परम्परा व्याख्या' को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिससे कृष्णभावनामृत आन्दोलन उत्तरोत्तर अधिक दृढ़ आधार पर स्थापित हो।

हमारा 'कृष्णभावनामृत आन्दोलन' प्रामाणिक, ऐतिहासिक दृष्टि से अधिकृत, स्वाभाविक तथा दिव्य है, क्योंकि इसका आधार श्रीमद्भगवद्गीता है। यह शनैः-शनैः सम्पूर्ण विश्व में, विशेष रूप से, तरुणवर्ग में सबसे अधिक लोकप्रिय आन्दोलन का स्थान पाता जा रहा है। यही नहीं, प्रौढ़ वर्ग भी अब इसमें रुचि लेने लगा है। यहाँ तक कि मेरे शिष्यों के पिता, पितामह, आदि हमारे महान् संघ—अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ के आजीवन सदस्य बनकर हमें प्रोत्साहित कर रहे हैं। जब मैं लॉस एंजिलिस में था तो बहुत से माता-पिता संपूर्ण विश्व में कृष्णभावनामृत आन्दोलन का संचालन करने के लिए मुझे धन्यवाद देने आते थे। उनमें से कुछ का उद्गार था कि यह अमरीकी जनता का सौभाग्य है कि मैंने कृष्णभावनामृत आन्दोलन का प्रवर्तन अमरीका में किया। परन्तु वास्तव में इस आन्दोलन के आदि-पिता भगवान् श्रीकृष्ण स्वयं हैं। उनसे अतीत काल में प्रारम्भ हुआ यह आन्दोलन शिष्य-परंपरा के द्वारा मानव-समाज में चला आ रहा है। यदि इस सम्बन्ध में मुझे कुछ सफलता मिली है, तो उसका श्रेय स्वयं मुझको नहीं, वरन् मेरे शाश्वत् गुरु, कृष्णकृपाविग्रह ॐ विष्णुपाद परमहंस परिव्राजकाचार्य १०८ श्री श्रीमद्भक्तिसिद्धान्त सरस्वती गोस्वामी महाराज प्रभुपाद को है।